



Date – 6 June 2022

ऑपरेशन महिला सुरक्षा



- ऑपरेशन महिला सुरक्षा के तहत, रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने 7000 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है जो अनधिकृत तरीके से महिलाओं के लिए आरक्षित कोचों में यात्रा कर रहे थे।
- इस दौरान आरपीएफ ने ऑपरेशन आहट (एएचटी) के तहत लड़कियों/महिलाओं को मानव तस्करी का शिकार होने से भी बचाया।

ऑपरेशन महिला सुरक्षा के बारे में

- महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 3 से 31 मई, 2022 तक अखिल भारतीय अभियान "ऑपरेशन महिला सुरक्षा" का आयोजन किया गया।

इस तरह के अन्य अभियान:

- ट्रेनों से यात्रा करने वाली महिला यात्रियों को उनकी यात्रा के दौरान बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक अखिल भारतीय पहल "मेरी सहेली" भी आयोजित की जा रही है।
- भारतीय रेलवे ने सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए "मेरी सहेली" पहल शुरू की है, जिसका उद्देश्य ट्रेन से यात्रा करने वाली महिला यात्रियों को स्टेशन से गंतव्य तक की यात्रा के दौरान सुरक्षा प्रदान करना है।

रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ)

- आरपीएफ एक केंद्रीय सशस्त्र बल है। जो भारतीय रेल, रेल मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- आरपीएफ की शुरुआत वर्ष 1882 में हुई जब विभिन्न रेलवे कंपनियों ने रेलवे संपत्ति की सुरक्षा के लिए अपने स्वयं के गार्ड नियुक्त किए।
- रेलवे सुरक्षा बल को वर्ष 1957 में संसद के एक अधिनियम द्वारा एक वैधानिक बल के रूप में मान्यता दी गई थी, जिसे बाद में वर्ष 1985 में भारत संघ के एक सशस्त्र बल के रूप में घोषित किया गया था।
- आरपीएफ नियम 1959 में बनाए गए थे और आरपीएफ विनियम 1966 में प्रकाशित हुए थे। उसी वर्ष, रेलवे संपत्ति (गैरकानूनी कब्जा) अधिनियम, 1966 के अधिनियमन द्वारा, इस बल को शामिल अपराधियों को पकड़ने और उन पर मुकदमा चलाने के लिए कुछ सीमित अधिकार दिए गए थे। रेलवे संपत्ति का मामला
- प्रारंभ में, आरपीएफ को मुख्य रूप से रेलवे संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, लेकिन जहां प्रभावी और अनुशासित बल रखरखाव के लिए आरपीएफ अधिनियम के प्रावधानों की कमी पाई गई, वहीं आरपीएफ नियम और विनियम भी न्यायिक रूप से अनुचित थे।
- तदनुसार, इस बल को संघ के सशस्त्र बल के रूप में गठित करने और बनाए रखने के लिए संसद द्वारा वर्ष 1985 में आरपीएफ अधिनियम, 1957 में संशोधन किया गया था।

स्वदीप कुमार

तरल-दर्पण दूरबीन



- हाल ही में, उत्तराखंड में आर्यभट्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ ऑब्जर्वेशनल साइंसेज (ARIES), नैनीताल के स्वामित्व वाले देवस्थल वेधशाला परिसर ने अंतर्राष्ट्रीय लिक्विड-मिरर टेलीस्कोप (ILMT) की स्थापना की है।

आईएलएमटी की मुख्य विशेषताएं:

- यह खगोल विज्ञान के लिए अधिकृत होने वाला दुनिया का पहला लिक्विड-मिरर टेलीस्कोप (LMT) बन गया है और दुनिया में कहीं भी काम करने वाला अपनी तरह का पहला टेलीस्कोप बन गया है।
- हिमालय में 2,450 मीटर की ऊंचाई से आईएलएमटी का उपयोग करते हुए क्षुद्रग्रह, सुपरनोवा, अंतरिक्ष मलबे और अन्य सभी खगोलीय पिंडों को देखा जाएगा।
- पहले निर्मित दूरबीनों ने या तो उपग्रहों को ट्रैक किया या सैन्य उद्देश्यों के लिए तैनात किया गया था।
- आईएलएमटी देवस्थल में बनने वाली तीसरी दूरबीन सुविधा होगी।
- खगोलीय अवलोकन प्राप्त करने के लिए देवस्थल दुनिया के मूल स्थानों में से एक है।
- देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप (डीओटी) और देवस्थल फास्ट ऑप्टिकल टेलीस्कोप (डीएफओटी) देवस्थल में अन्य दो टेलीस्कोप सुविधाएं हैं।
- आईएलएमटी का पूर्ण पैमाने पर वैज्ञानिक संचालन अक्टूबर 2022 में शुरू किया जाएगा।
- यह भारत के सबसे बड़े परिचालन देवस्थल ऑप्टिकल टेलीस्कोप (डीओटी) के साथ काम करेगा।
- आईएलएमटी के विकास में शामिल देश भारत, बेल्जियम, कनाडा, पोलैंड और उज्बेकिस्तान हैं।

पारंपरिक टेलीस्कोप से एलएमटी का अंतर:

- एलएमटी एक स्थिर दूरदर्शी है, जबकि एक पारंपरिक दूरबीन आकाश में 'रुचि की वस्तु' की दिशा में काम करती है।
- एक एलएमटी सभी संभावित खगोलीय पिंडों जैसे सितारों, आकाशगंगाओं, सुपरनोवा विस्फोटों, क्षुद्रग्रहों और यहां तक कि अंतरिक्ष मलबे का सर्वेक्षण करेगा। हालांकि, एक पारंपरिक दूरबीन एक निश्चित समय में आकाश का केवल एक अंश ही देख पाती है।
- एलएमटी में परावर्तक द्रव के साथ दर्पण होते हैं (आईएलएमटी में पारा परावर्तक द्रव के रूप में होता है)। दूसरी ओर एक पारंपरिक दूरबीन अत्यधिक पॉलिश किए गए कांच के दर्पणों का उपयोग करती है।
- आईएलएमटी सभी रातों में आकाश के चित्र प्राप्त करेगा, जबकि पारंपरिक दूरबीनें आकाश में विशिष्ट वस्तुओं को केवल कुछ घंटों में ही प्राप्त करती हैं।

आईएलएमटी का महत्व:

- बड़ी मात्रा में डेटा (10-15 जीबी/रात) उत्पन्न होगा। यह वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के लिए महत्वपूर्ण होगा।
- यह डेटा की स्क्रीनिंग, प्रोसेसिंग और विश्लेषण के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और बिग डेटा एनालिटिक्स जैसे नवीनतम कम्प्यूटेशनल टूल को तैनात करेगा।
- इन-हाउस डीओटी-माउंटेड स्पेक्ट्रोग्राफ, नियर-इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोग्राफ का उपयोग करके चयनित डेटा को आगे केंद्रित अनुसंधान के लिए आधार डेटा के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

स्वदीप कुमार